ISSN : 2229-3841

NATIONAL Journal of Education

A Half-Yearly
Peer Reviwed Refereed
Educational
Research Journal

January 2019 Issue - 10 Vol. 13

Scanned with OKEN Scanner

Contents

1. Philosophy of Gandhi & Human Rights : An Evaluation
Surendra Yadav 7
2. A Comparative Study of Adolescent's Scholarly Achievement, Social Competence and Stress among Senior Secondary Rural Students on Selected Demography Variables
Dharmendra Kumar Sarraf & Girija Prasad Mishra 17
3. Comparative Study of infrastructure of Government and Private school in India Including basic facility, Qualification of teacher, Government Scheme, Performance of Teacher, Recruitment process.
Dr. Girija Prasad Mishra & Suneel 29
4. A Short synthesis of the Education Policy-2020
Dr. Suman Shukla 'Hans' 42
5. Depreciation of Values in Present Education Scenario, Due to Discrimination in Education System, Challenge, and Remedies
Dr. Satya Prakash Dwivedi & Suneel 45
6. e-Learning: The ICT Based Teaching–Learning System
Sharon Rose Dayal 53
7. Occupational stress of Government and Private teacher teaching in higher secondary school in Pratapgarh district
Dr. Prashobh Paul D'Souza 59
8. Ancient Indian Education system in Indias
Ms. Pooja Sonpakar 63
9. A Comparative Study of Effectiveness of Teaching Mathematics through Conventional & Vedic Mathematics Approach
Anubhuti Sinha 67
10. स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में महात्मा गाँधी के विचार *अभिषेक तिवारी* 71
11. प्राथमिक शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि *डॉ. मंजू कुमारी* 76
12. प्राथमिक शिक्षा में शिक्षण के प्रति शिक्षक का दायित्व *अनुराधा कुमारी* 78
13. भारत में शिक्षा के अधिकार अधिनियम का क्रियान्वयन *पीयूष राज प्रभात* 83
14. प्रयागराज जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन *कु0 रेनु* 86
15. सामाजिक वातावरण एवं अहम्केन्द्रिता
डॉ0 सतीश चन्द्र द्विवेदी' डॉ0 कैप्टन अबुतलहा अन्सारी 89
16. सामान्य एवं दिव्यांग किशोरों के आत्मसंबोध का अध्ययन *डॉ. अनूपी समैया* 92
17. बेसिक शिक्षा में शैक्षिक प्रबन्धन की समस्या *अंकुर चौहान* 98
18. बेसिक भारत में बाजार, विज्ञापन व उपभोक्ता शिक्षा *डॉ0 महेन्द्र त्रिपाठी* 101
19. प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन *अनुपमा सिंह* 106
20. किशोरावस्था में संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में समायोजन का अध्ययन
डॉ0 अविनाश पाण्डेय 115
21. सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन *डॉ0 धर्मेन्द्र शुक्ल* 122

Saamaany Awam Vikalaang Kishoro ke Aatmasambodh ka Adhyan

Scanned with OKEN Scanner

ISSN – 2229-3841

National Journal of Education

A Half-Yearly Refereed Educational Research Journal

January, 2019 • Issue: 10, Vol.: 13

सामान्य एवं विकलांग किशोरों के आत्मसंबोध का अध्ययन

डॉ. अनूपी समैया

असिसटेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, म.प्र.

सारांश

सामान्यतः एक व्यक्ति जो अनुभव दूसरे व्यक्तियों, वस्तुओं, समूहों, आदर्शों तथा मूल्यों के संबंध में प्राप्त करता है, वे आत्म के लिए उत्तरदायी होते हैं। इस रूप में किसी व्यक्ति का आत्म उसके स्वयं के विचारों तथा कार्यो के प्रति चेतना है। किसी विशिष्ट परिस्थिति में व्यक्ति अपनी स्वीकृति या अस्वीकृति के बारे में जो अनुमान लगाता है, वही आत्मसंबोध है। किसी की आत्म–धारणा उनकी आत्म–अवधारणा, आत्म–ज्ञान, आत्म–सम्मान और सामाजिक स्व द्वारा परिभाषित की जाती है। किसी कीं आत्म–अवधारणा जिसे स्व–निर्माण, आत्म–पहचान या आत्म–परिप्रेक्ष्य भी कहा जाता है। स्वयं के बारे में विश्वासों का एक संग्रह है जिसमें शैक्षणिक प्रदर्शन, लिंग भूमिकाएं और कामुकता, नस्लीय पहचान और कई अन्य जैसे तत्व श्शामिल हैं। आमतौर पर, आत्म–अवधारणा 'मैं कौन हूँ' का उत्तर देता है। यह शोध अध्ययन सामान्य एवं विकलांग किशोरों के आत्मसंबोध के लिए आयोजित किया गया है। सागर शहर के माध्यमिक स्तर के 60 सामान्य एवं विकलांग किशोरों का चयन यादृच्छिका न्यादर्श अर्थात् रेण्डम सेंपलिंग द्वारा किया गया है। प्रदत्त संग्रहण हेतु आर. के. सारस्वत द्वारा निर्मित व मानकीकृत मापनी 'आत्मसंबोध प्रश्नावली' का प्रयोग किया है। अध्ययन के नि सामान्य एवं विकलांग छात्र किशोरों के आत्मसंबोध में सार्थक अंतर नहीं है। सामान्य एवं विकलांग छात्रा किशोरों के आत्मसंबोध में सार्थक अंतर नहीं है। सामान्य एवं विकलांग समग्र किशोरों के आत्मसंबोध में सार्थक अंतर नहीं है। जो इस बात का द्योतक है कि दोनों समूहों के कार्यो में कोई भिन्नता नहीं है अर्थात् सामान्य किशारों एवं विकलांग किशोरों का आत्मसंबोध उच्चस्तरीय है।

बचपन और युवावस्था का संधिस्थल है किशोरावस्था।[1] किशोरावस्था मानव विकास की सबसे महत्वपूर्ण अवधि है। इस अवस्था में, बच्चे यौन परिपक्व हो जाते हैं और कानूनी परिपक्वता की उम्र तक पहुँच जाते हैं। यह व्यक्ति की श्शारीरिक, मानसिक, नैतिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक, यौन और सामाजिक दृष्टिकोण में तेजी से क्रांतिकारी परिवर्तनों की अवधि है। मानव व्यक्तित्व नए आयाम विकसित करता है। किशोरावस्था बचपन और वयस्कता के बीच एक विकासात्मक संक्रमण है। किशोरावस्था जिंदगी का एक अहम एहसास है। एकाएक हाने वाले परिवर्तन हैरान करते हैं, और मन में सवालों का सैलाब उमड़ने लगता है। किससे कहें, मन की बातें? किससे पूछें सवाल? किसे बताएं अपनी परेशानियाँ? माता–पिता से दूरी बढ़ने लगती है, और निकट आने लगते है दोस्त। बातें तो इतनी कि कभी खत्म न हों। कर लो दुनिया मुठ्ठी में... कुछ ऐसा ही जज्बा होता है इस उम्र में।

Scanned with OKEN Scanner